विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम दिनांक -२६ -०६ - २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -९ के अन्तर्गत मेरा विद्यार्थी जीवन के बारे में अध्ययन करेंगे।

गाँधीजी की प्रारंभिक शिक्षा

- पोरबंदर में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाएं नहीं होने के कारण मोहनदास ने अपनी प्राथमिक शिक्षा मुश्किल परिस्थितियों में पूरी की थी. उन्होंने मिट्टी में उंगलियों से उकेर कर वर्णमाला सीखी थी. बाद में किस्मत से उनके पिता को राजकोट में दीवानी मिल गई, जिससे उनकी समस्याएं काफी हद तक कम हो गई.
- मोहनदास ने अपने स्कूल के दिनों में काफी इनाम जीते,उनके शिक्षा सम्बन्धित उपलब्ध रिकॉर्ड के अनुसार वो इंग्लिश में अच्छे थे, गणित में ठीक थे लेकिन जियोग्राफी में कमजोर थे, उनकी हैण्ड राइटिंग भी कुछ विशेष अच्छी नहीं थी.
- 1887 में गांधीजी ने यूनिवर्सिटी ऑफ़ बॉम्बे से मेट्रिक का एग्जाम पास किया और भावनगर का सामलदास कॉलेज जॉइन किया, जहां पर उन्होंने अपनी मातृभाषा गुजरती को छोडकर इंग्लिश सीखी,इसके कारण उन्हें लेक्चर समझने में परेशानी भी हुई.
- इसी दौरान उनका परिवार उनके भविष्य को लेकर बहुत चिंतित था,क्योंकि वो डॉक्टर बनना चाहते थे,लेकिन वैष्णव परिवार से होने के कारण वो डॉक्टर का काम नहीं कर सकते थे, इसलिए उनके परिवार वालों को लगा की उन्हें अपने परिवार की परम्परा को निभाते हुए गुजरात के किसी हाई-ऑफिस में अधिकारी के पद पर लगना होगा, इसके लिए उन्हें बेरिस्टर बनना होगा. और उस समय मोहनदास भी सामलदास कॉलेज में खुश नहीं

थे, वो ये सुनकर बहुत खुश हो गये. उस समय की उनकी युवावस्था ने भी उन्हें इंग्लैंड के कई सपने दिखाए, एक भूमि जहां पर बहुत से फिलोसोफर और पोएट्स होंगे, वो सिविलाइजेशन का केंद्र होगा. वैसे उनके पिता ने उनके लिए बहुत कम सम्पति और पैसे छोड़े थे, और उनकी माँ भी उन्हें विदेश भेजने से डर रही थी,लेकिन गांधीजी अपने निर्णय पर अडिग थे कि वो इंग्लैंड जायेंगे. उनके भाई ने आवश्यक पैसों का इंतजाम किया, और उन्होंने अपनी माँ को ये कहकर मनाया कि वो घर से दूर रहकर भी कभी शराब को हाथ नहीं लगायेंगे, किसी पर-स्त्री को नहीं देखेंगे, या मीट नहीं खायेंगे. हालांकि मोहनदास ने इस राह में आने वाली आखिरी बाधा मतलब शर्त को मानने से इनकार कर दिया था जिसके अनुसार वो समुन्द्र की यात्रा नहीं कर सकते थे और इस तरह सितम्बर 1888 को वो रवाना हो गए. वहाँ पर पहुचने के 10 दिनों बाद उन्होंने लंदन लॉ कॉलेज में से एक “इनर टेम्पल” को जॉइन कर लिया.